Magha Gupta Navaratri 2015

माघ गुप्त नवरात्री २०१५

Sumit Girdharwal
Mob - 9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.baglamukhi.info
www.yogeshwaranand.org



प्रत्येक वर्ष आने वाले दो नवरात्रों से तो आप सभी लोग परिचित हैं लेकिन इनके अलावा प्रत्येक वर्ष दो और नवरात्री होती हैं जिन्हें गुप्त नवरात्री कहा जाता है। पूर्व काल में इनका ज्ञान केवल उच्च कोटि के साधकों को होता था जो इस समय का उपयोग विशिष्ट साधनाओं को सम्पन्न करने में किया करते थे।

गुप्त नवरात्र में पूजा, उपासना सामान्य नवरात्रों के समान ही होती है। तान्त्रिक समाज में इन नवरात्रों का बहुत ही महत्व है, जो इस समय की लगातार प्रतिक्षा करतें हैं।

नवरात्र पंचांग

प्रथम नवरात्री घट पूजन शैलपुत्री पूजन 21st Jan 2015

द्वितीय नवरात्री ब्रहमचारिणी पूजन 22nd Jan 2015

तृतीय एवं चतुर्थ नवरात्री चन्द्रघण्टा एवं कुष्माण्डा पूजन 23nd Jan 2015

पंचम नवरात्री स्कन्दमाता पूजन 24th Jan 2015

षष्ठं नवरात्री कात्यायनी पूजन 25th Jan 2015

सप्तं नवरात्री कालरात्री पूजन 26th Jan 2015

अष्टम नवरात्री दुर्गा पूजन 27th Jan 2015

नवम नवरात्री सिद्धिदात्री पूजन 28th Jan 2015

दशमी नवरात्र परायण 29th Jan 2015

पाठ विधान

प्रतिपदा अर्थात् नवरात्र के प्रथम दिवस से चण्डी-पाठ अर्थात् दुर्गा सप्तशती का पाठ आरम्भ किया जाता है। कुछ साधक प्रतिदिन सम्पूर्ण दुर्गा सप्तशती का पाठ करते हैं, लेकिन कुछ साधक समयाभाव के कारण अथवा अन्य किन्हीं कारणों से सम्पूर्ण दुर्गा सप्तशती का पाठ नहीं कर पाते हैं और वे नवरात्र के समापन तक दुर्गा सप्तशती पूर्ण करते है। ऐसे व्यक्ति, जो सम्पूर्ण नवरात्र में केवल दुर्गा सप्तशती का मात्र एक ही पाठ करते हों, उन्हें चाहिए कि वे निम्नानुसार अपने पाठ करें-

प्रतिपदा - अध्याय एक का पाठ करें।

द्वितीया - अध्याय दो व तीन का पाठ करें।

तृतीया - अध्याय चार का पाठ करें। इस दिन सौभाग्य सुन्दरी व्रत रखें।

चतुर्थी - अध्याय पांच, छः, सात व आठ का पाठ करें।

पंचमी - अध्याय नौ व दस का पाठ करके लक्ष्मी-पूजन करें।

छठ - अध्याय ग्यारह का पाठ करें।

सप्तमी - अध्याय बारह व तेरह का पाठ करें। इस दिन महानिशा पूजन भी करें।

अष्टमी - इस दिन महा अष्टमी का व्रत रखें।

नवमी - महा नवमी व्रत, हवन । इस दिन श्री राम नवमी का व्रत भी रखाा जाता है। जो साधक भगवती तारा के उपासक हैं, उनके लिए तो यह दिवस विशिष्ट स्थान रखता है, क्योंकि उस दिन माता तारा की जयन्ती मनायी जाती है।

(अपनी कुल-परम्परा अथवा अपने संकल्प के अनुसार साधक को अष्टमी अथवा नवमी को अपने द्वारा किये गये पाठों का दशांश हवन करके, कन्या-पूजन करना चाहिए) । पारण दशमी में प्रातःकाल करें।

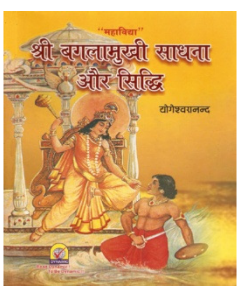
यदि आप दुर्गा सप्तशती का पाठ नही कर सकते हैं तो इस पर्व में आप अपने इष्ट का अनुष्ठान कर सकते हैं और यह अनुष्ठान आपके जीवन में एक नई उर्जा लेकर आयेगा। यदि अभी तक आपने दीक्षा नही ली है तो यह पर्व दीक्षा लेने के लिए सर्वश्रेष्ठ है।

यदि आपको हमारे द्वारा लिखे गये लेख पंसद है तो कृपया हमें अपनी ईमेल आईडी अवश्य भेजें । उसके पश्चात हमारे द्वारा लिखे सभी लेख हम आपको सीधे आपकी ईमेल पर ही भेज देंगें। हमारा ईमेल है -
sumitgirdharwal@yahoo.com

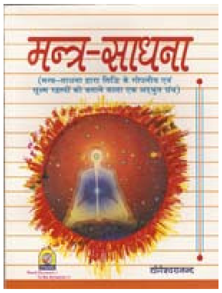
People, who are unable to read the Hindi or Sanskrit & want to read our articles, please send your request for the English translation with the article name & its link to sumitgirdharwal@yahoo.com. Based on the number of request for the particular article we will try to translate it into English as soon as possible.
For Astrology, Mantra Diksha & Puja contact us.

Some of our books -

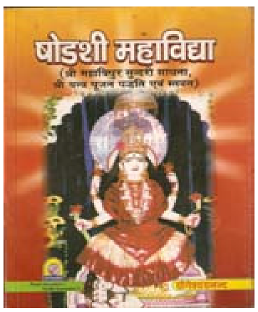
1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi



2. **Mantra Sadhana**



3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)



4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

श्री बगलामुखी साधना रहस्य का प्रकाशन जल्द ही किया जा रहा है। यह पुस्तक लगभग ७०० पृष्ठ की है जिसमें मां पीताम्बरा की साधना की पूर्ण विधि दी गयी है। इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए Rs 680 नीचे लिखे अकाउण्ट में जमा करायें

Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298
IFSC Code – UTIB0001094

Support & Feedback

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first

phase we will digitalize all the content regarding Das Mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. We need your support to complete this task

Requirement -

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Font chanakya) or Microsoft Office (Font Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project.

Baglamukhi Ashtottar ShatNam Stotram
बगलामुखी अष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम्

Sumit Girdharwal
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.baglamukhi.info
www.yogeshwaranand.org



भगवती पीताम्बरा के भक्तों को प्रतिदिन मंत्र जप करने के पश्चात मां के अष्टोत्तर-शतनाम का पाठ करना चाहिए । इसके पाठ से भगवती की विशेष कृपा प्राप्त होती है जिन साधको ने भगवती पीताम्बरा की दीक्षा अभी तक प्राप्त नही की है वो सर्वप्रथम गुरू मुख से दीक्षा लें एवं उसी के पश्चात पाठ करें।

अष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम्

ओम् ब्रह्मास्त्र-रुपिणी देवी, माता श्रीबगलामुखी ।

चिच्छिक्तिर्ज्ञान-रुपा च, ब्रह्मानन्द-प्रदायिनी ।। १ ।।

महा-विद्या महा-लक्ष्मी श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरी ।

भुवनेशी जगन्माता, पार्वती सर्व-मंगला ।। २ ।।

ललिता भैरवी शान्ता, अन्नपूर्णा कुलेश्वरी ।

वाराही छिन्नमस्ता च, तारा काली सरस्वती ।। ३ ।।

जगत्-पूज्या महा-माया, कामेशी भग-मालिनी ।

दक्ष-पुत्री शिवांकस्था, शिवरुपा शिवप्रिया ।। ४ ।।

सर्व-सम्पत्-करी देवी, सर्व-लोक वशंकरी ।

वेद-विद्या महा-पूज्या, भक्ताद्वेषी भयंकरी ।। ५ ।।

स्तम्भ-रुपा स्तम्भिनी च, दुष्ट-स्तम्भन-कारिणी ।

भक्त-प्रिया महा-भोगा, श्रीविद्या ललिताम्बिका ।। ६ ।।

मेना-पुत्री शिवानन्दा, मातंगी भुवनेश्वरी ।

नारसिंही नरेन्द्रा च, नृपाराध्या नरोत्तमा ।। ७ ।।

नागिनी नाग-पुत्री च, नगराज-सुता उमा ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
Sumitgirdharwal@yahoo.com , shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

पीताम्बरा पीत-पुष्पा च, पीत-वस्त्र-प्रिया शुभा ।। ८ ।।

पीत-गन्ध-प्रिया रामा, पीत-रत्नार्चिता शिवा ।

अर्द्ध-चन्द्र-धरी देवी, गदा-मुद्गर-धारिणी ।। ९ ।।

सावित्री त्रि-पदा शुद्धा, सद्यो राग-विवर्द्धिनी ।

विष्णु-रुपा जगन्मोहा, ब्रह्म-रुपा हरि-प्रिया ।। १० ।।

रुद्र-रुपा रुद्र-शक्तिश्चिन्मयी भक्त-वत्सला ।

लोक-माता शिवा सन्ध्या, शिव-पूजन-तत्परा ।। ११ ।।

धनाध्यक्षा धनेशी च, धर्मदा धनदा धना ।

चण्ड-दर्प-हरी देवी, शुम्भासुर-निवर्हिणी ।। १२ ।।

राज-राजेश्वरी देवी, महिषासुर-मर्दिनी ।

मधु-कैटभ-हन्त्री च, रक्त-बीज-विनाशिनी ।। १३ ।।

धूम्राक्ष-दैत्य-हन्त्री च, भण्डासुर-विनाशिनी ।

रेणु-पुत्री महा-माया, भ्रामरी भ्रमराम्बिका ।। १४ ।।

ज्वालामुखी भद्रकाली, बगला शत्रु-नाशिनी ।

इन्द्राणी इन्द्र-पूज्या च, गुह-माता गुणेश्वरी ।। १५ ।।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
Sumitgirdharwal@yahoo.com , shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

वज्र-पाश-धरा देवी, जिह्वा-मुद्गर-धारिणी ।
भक्तानन्दकरी देवी, बगला परमेश्वरी ।। १६ ।।

फल-श्रुति

अष्टोत्तरशतं नाम्नां, बगलायास्तु यः पठेत् ।
रिपु-बाधा-विनिर्मुक्तः, लक्ष्मीस्थैर्यमवाप्नुयात् ।। १ ।।
भूत-प्रेत-पिशाचाश्च, ग्रह-पीड़ा-निवारणम् ।
राजानो वशमायाति, सर्वैश्वर्यं च विन्दति ।। २ ।।
नाना-विद्यां च लभते, राज्यं प्राप्नोति निश्चितम् ।
भुक्ति-मुक्तिमवाप्नोति, साक्षात् शिव-समो भवेत् ।। ३ ।।

।। श्रीरूद्रयामले सर्व-सिद्धि-प्रद श्री बगलाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् ।।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
Sumitgirdharwal@yahoo.com , shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

Devi Baglamukhi Hridaya Mantra

।। श्रीबगलामुखीहृदयमंत्र ।।

Sumit Girdharwal

9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.baglamukhi.info
www.yogeshwaranand.org



हृदय मंत्र को देवता का हृदय कहा जाता है इसके जप से देवता का सानिध्य बढ़ता है एवं सिद्ध होने पर दर्शन प्राप्त होते हैं अपने गुरूदेव से इस मंत्र की दीक्षा लेकर ही इसका जप करें । कई बार ऐसा देखा गया है कि कुछ लोग साधना के प्रारम्भ में ही हृदय मंत्र का जप शुरू कर देते है और जैसे ही देवता का सानिध्य बढ़ता है तो घबरा जाते है और डर से अपनी साधना बीच में ही छोड़ देतें है इसलिए साधको को मेरा

परामर्श है कि जब आपके गुरूदेव कहें तभी इसका जप करें । नये साधको को इसके स्थान पर बगलामुखी हृदय स्तोत्र का पाठ करना चाहिए ।

विनियोग- ॐ अस्य श्रीबगलामुखीहृदयमंत्रस्य नारदः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबगलामुखीदेवता, ह्लीं बीजम्, क्लीं शक्तिः, ऐं कीलकम्, श्रीबगलामुखी प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास

ॐ नारदऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे । श्रीबगलामुखी देवतायै नमः हृदि । ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये । क्लीं शक्तये नमः पादयोः । ऐं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे

करन्यास

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः । क्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ।ऐं मध्यमाभ्यां वषट् ।ह्लीं अनामिकाभ्यां हुम् । क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् । ऐं अस्त्राय फट् ।

हृदयादिन्यास-

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः । क्लीं शिरसे स्वाहा । ऐं शिखायै वषट् ।ह्लीं कवचाय हुम् ।क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् । ऐं अस्त्राय फट्

।।ध्यानम्।।

बालभानुप्रतीकाशां नीलकोमलकुन्तलाम् ।
वन्देऽहं बगलां देवीं स्तम्भनास्त्ररुपिणीम् ।।

मंत्र- आं ह्लीं क्रों ग्लौं हुं ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं बगलामुखी ! आवेशय आवेशय, आं ह्लीं क्रों ब्रह्मास्त्ररुपिणी ! एहि एहि आं ह्लीं क्रों मम हृदये आवाहय आवाहय, सान्निध्यं कुरु कुरु आं ह्लीं क्रों ममैव हृदये चिरं तिष्ठ तिष्ठ, आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।

Mantra : Aam Hleem Krom Glaum Hoom Aim Kleem Shreem Hreem Baglamukhi ! Aaveshaya Aaveshaya, Aam Hleem Krom BrahmastraRupini ! Aehi Aehi Aam Hleem Krom Mama Hridaye Aavahaya Avahaya, Saanidhyam Kuru Kuru Aam Hleem Krom Mameva Hridaye Chiram Tishth Tishth, Aam Hleem Krom Hoom Phat Swaha

प्रयोग- इस मंत्र का प्रयोग किसी विशेष परिस्थिति में ही करना चाहिए क्योंकि यह बहुत ही अधिक ही तीव्र है मंत्र प्रयोग के बाद बगला गायत्री एवं मूल मंत्र का अनुष्ठान देवी की प्रसन्नता के लिए अवश्य करना चाहिए ।

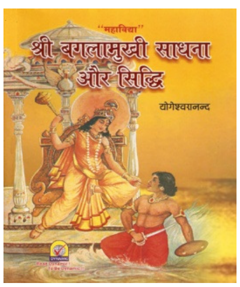
सांख्यायनतंत्र में इस दुर्लभ मंत्र की प्रशंसा करते हुए कहा है कि इसके स्मरण मात्र से महादरिद्र व्यक्ति भी लक्ष्मीवान् हो जाता है, जड़ व्यक्ति पण्डित हो जाता है, चोर भी बुद्धिमान बन जाता है एवं निन्दित मनुष्य भी कीर्तिवान् हो जाता है। शत्रु पर इस मंत्र का प्रयोग करने से साधक का प्रतिष्ठावान् शत्रु भी समाज में उपहास व असम्मान का पात्र बनता है। इस मंत्र की साधना जापक को समस्त प्रकार से संतुष्ट रखती है। आस्थापूर्वक निरन्तर जप करने से जापक को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

- मंत्र को सिद्ध करने के पश्चात् उक्त मंत्र से बंध्या स्त्री के गर्भांग का मार्जन करने से छह मास की अवधि में गर्भधारण करके पुत्र को जन्म देती है। इसके साथ में बगला कवच से अभिमंत्रित जल स्त्री को देना चाहिए ।

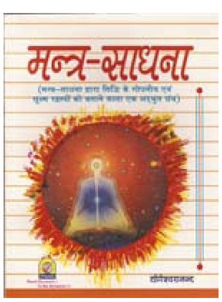
- सूर्यादय के समय बगलाहृदय मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित दूध पीने से छह मास के भीतर बन्ध्या भी पुत्र को जन्म देती है।
- शत्रु के अभिचारिक प्रयोग के कारण कोई भयानक रोग, व्याधि या महाभय उत्पन्न होने पर इस अमोघ मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित जल पीने से तुरन्त रोग या महाभय से छुटकारा मिलता है।

Books written by Shri Yogeshwaranand Ji

1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi

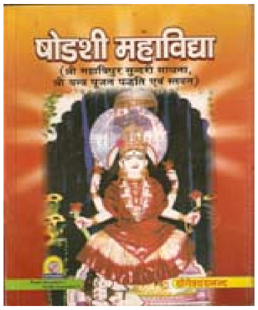


2. **Mantra Sadhana**



Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9917325788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)



4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya is the upcoming book of my father and my guru Shri Yogeshwaranand Ji on Ma Baglamukhi. Only limited copies of this book are going to be published. If you want to secure your copy before all sold out please make a payment of Rs 680 into the below A/C
Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298
IFSC Code – UTIB0001094
After payment send your complete address and payment receipt to shaktisadhna@yahoo.com & sumitgirdharwal@yahoo.com. For more details please call on +91-9540674788, 91-9410030994

Feedback & Support

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will digitalize all the content provided by Shri Yogeshwaranand Ji regarding das mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. I can't do it alone. I request all of you to help me achieve this goal.

Requirement

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Preferable font chanakya) or Microsoft Office (Font Used Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project.

My dear readers! Very soon We are going to start an E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at sumitgirdharwal@yahoo.com Thanks

Baglamukhi Mantra Evam Puja Vidhi in Hindi

माँ बगलामुखी मंत्र एवं पूजा विधि

Sumit Girdharwal
(सुमित गिरधरवाल)
Mob - 9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.baglamukhi.net
www.yogeshwaranand.org



।। भगवती पीताम्बरा के एकाक्षरी मंत्र का महात्म्य ।।

भगवती बगलामुखी (पीताम्बरा) के इस मंत्र को महामंत्र के नाम से जाना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि भगवती बगलामुखी की उपासना करने वाले

साधक के सभी कार्य बिना व्यक्त किये पूर्ण हो जाते हैं और जीवन की हर बाधा को वो हंसते हंसते पार कर जाते हैं मैनें स्वयं अपने जीवन में अनेको चमत्कार देखें हैं, जिनको सुनकर कोई भी यकीन नही करेगा लेकिन भगवती पीताम्बरा अपने भक्तों के ऊपर ऐसे ही कृपा करती हैं एकाक्षरी मंत्र माँ पीताम्बरा का बीज मंत्र है, इसके जप के बिना माँ पीताम्बरा की साधना पूर्ण नही होती । माँ पीताम्बरा की साधना इसी बीज मंत्र से प्रारम्भ होती है, एवं साधको को बीज मंत्र का नियमित रूप से कम से कम २१ माला का जप अवश्य करना चाहिए, क्योंकि बीज मंत्र में ही देवता के प्राण होते हैं जिस प्रकार बीज के बिना वृक्ष की कल्पना नही की जा सकती उसी तरह बीज मंत्र के जप के बिना साधना में सफलता के बारे में सोचना भी व्यर्थ है। भगवती की सेवा केवल मंत्र जप से ही नही होती है बल्कि उनके नाम का गुणगान करने से भी होती है । जिस प्रकार नारद ऋषि हर पल भगवान विष्णु का नाम जपते थे, उसी प्रकार सुधी साधको को माँ पीताम्बरा का नाम जप हर पल करना चाहिए एवं अन्य लोगो को भी उनके नाम की महिमा के बारे में बताना चाहिए । मैंने अपने जीवन का केवल एक ही उद्देश्य बनाया है कि माँ पीताम्बरा के नाम को हर व्यक्ति तक पहुंचाना है आप सब भी यदि माँ की कृपा प्राप्त करना चाहते हैं तो आज से ही भगवती के एकाक्षरी मंत्र को अपने जीवन में उतार लीजिए एवं माँ के नाम एवं उनकी महिमा का अधिक से अधिक प्रचार करना शुरू कर दीजिए। साधको के हितार्थ भगवती के बीज मंत्र की जानकारी यहां दे रहा हूँ, भगवती पीताम्बरा आप सब पर कृपा करें ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9917325788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

ध्यान

वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति।

क्रोधी शान्तति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति।।

गर्वी खवर्ति सर्व विच्च जडति त्वद्‌यन्त्राणा यंत्रितः।

श्रीनित्ये बगलामुखि! प्रतिदिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः।।

मंत्र - ह्ल्रीं (Hlreem)

विनियोगः-

ओम् अस्य एकाक्षरी बगला मंत्रस्य ब्रह्म ऋषिः, गायत्री छन्दः, बगलामुखी देवताः, लं बीजं, ह्रीं शक्ति, ईं कीलकं, मम सर्वार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-

- ओम् ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि।
- गायत्री छंदसे नमः मुखे।
- श्री बगलामुखी देवतायै नमः हृदि।
- लं बीजाय नमः गुह्ये।
- ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।
- ईं कीलकाय नमः सर्वांगे।
- श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अंजलौ।

षडंगन्यासः

- ओम् ह्ल्रां हृदयाय नमः।
- ओम् ह्ल्रीं शिरसे स्वाहा।
- ओम् ह्ल्रूं शिखायै वषट्।
- ओम् ह्ल्रैं कवचाय हूं।
- ओम् ह्ल्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्।
- ओम् ह्ल्रः अस्त्राय फट्।

करन्यासः

- ओम ह्ल्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
- ओम ह्ल्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
- ओम ह्ल्रूं मध्यमाभ्यां वषट्।
- ओम ह्ल्रैं अनामिकाभ्यां हूं।
- ओम ह्ल्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
- ओम ह्ल्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

बीज मंत्र का अनुष्ठान

एक लाख पच्चीस हजार (1,25,000 मंत्रो अथवा 1250 माला) की संख्या में हल्दी की माला पर जप करना चाहिए । उसके पश्चात (12,500 मंत्रो अथवा

125 माला) से हवन अवश्य करना चाहिए, क्योंकि हवन से देवता को शक्ति मिलती है और मैंने स्वयं इसका अनुभव किया है कि हवन से माँ की कृपा बहुत जल्दी मिलती है। इसलिए हवन से बढकर कुछ नही है। यदि हो सके तो हवन नियमित रूप से करना चाहिए । जो लोग हवन करने में समर्थ नही हैं उन्हे अपने गुरू से अनुष्ठान के पश्चात हवन करने का आग्रह करना चाहिए एवं उस हवन में सम्मिलित होना चाहिए । अपने गुरू से हवन विधि सीखने के लिए निवेदन करें । पूर्णाभिषेक दीक्षा तक हवन करना अवश्य सीख लेना चाहिए।

इसके पश्चात (1250 मंत्रो अथवा 13 माला) से तर्पण करना चाहिए ।

तर्पण करने का मंत्र है "हल्रीं तर्पयामि" । इसके लिए एक बड़ा पात्र ले, जिसमें १ से २ लीटर पानी आ जाये। उसके पश्चात उसमें थोड़ा गंगा जल लें । उसके बाद उसमें ऊपर तक पानी भर लें एवं थोड़ी हल्दी, शहद, शक्कर, केसर, दुध मिला लेना चहिए । उसके पश्चात जिस प्रकार सुर्य को हाथों से अंजली में जल भरकर जल अर्घ्य दिया जाता है उसी प्रकार सीधे हाथ से अंजली बनाकर "हल्रीं तर्पयामि" बोलते हुए उसी पात्र में जल को छोड़ देना चाहिए । तर्पण करते हुए मंत्र जाप उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर करना चाहिए एवं सीधे हाथ से तर्पण करना चाहिए ।

तर्पण के पश्चात (125 मंत्रो अथवा 2 माला) से मार्जन करना चाहिए । मार्जन करने का मंत्र है "हल्रीं मार्जयामि" । इसके लिए थोड़ी सी कुशा लें। एक पात्र में गंगा जल लेकर उस कुशा से भगवती के यंत्र पर "हल्रीं मार्जयामि" बोलते हुए गंगा जल की छींटे दे। मार्जन भी सीधे हाथ से करना चाहिए एव उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर जप करना चाहिए। यदि कुशा उपलब्ध ना हो तो पीले फूल का भी उपयोग किया जा सकता है।

मार्जन करने के पश्चात ११ कन्याओं को भोजन कराना चाहिए एवं उनकी प्रसन्नता के लिए उन्हें सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा देनी चाहिए ।

अनुष्ठान करने से पूर्व अपने गुरू से आज्ञा अवश्य लेनी चाहिए एवं अनुष्ठान पूर्ण हाने के पश्चात उन्हे सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा अवश्य देनी चाहिए। अपने माता पिता से आशीर्वाद अवश्य लें चूंकि उन्ही के कारण आप इस संसार में आयें हैं । जिन लोगो के उपर माता-पिता एवं गुरू की कृपा है उनके ऊपर माँ की कृपा स्वयं ही हो जाती है अपने माता-पिता एवं गुरू को रूष्ट कर आप माँ की कृपा कभी भी प्राप्त नही कर सकते। यदि आपके गुरू नही हैं तो "ओम् पीताम्बरायै नमः" मंत्र का हल्दी की माला पर नियमित रूप से जप करें एवं माँ से गुरू प्राप्ति के लिए आग्रह करें ।

मेरे पास बहुत से लागो के ईमेल एवं फोन आते है जो चाहते है कि माँ पीताम्बरा की पूजा का क्रम बतायें । साधको के हितार्थ यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ -

१. आसन पूजा, आचमन एवं शुद्धि-करण

२. गुरू पूजन

३. गणेंश पूजन (हरिद्रा गणपति पूजन)

४. भैरव पूजन - शक्ति की उपासना में भैरव पूजन का विशेष महत्व होता है माँ बगलामुखी के भैरव मृत्युंजय भैरव हैं इसलिए भगवती की उपासना से पहले भैरव जी से आज्ञा अवश्य लेनी चाहिए एवं जप के अन्त में दशांश मृत्युंजय भैरव मंत्र " हौं जूं सः " का जप अवश्य करना चाहिए ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9917325788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

५. ध्यान : इसके पश्चात भगवती पीताम्बरा का ध्यान करें कि माँ आपके हृदय में सहस्रदल कमल के फूल पर विराजित हैं। माँ के चरणों का ध्यान करते हुए मन ही मन उनके चरणों में पीले पुष्प अर्पित करें एवं उनसे सदैव अपने हृदय में निवास करने की प्रार्थना करें ।

६. माँ का पूजनः ध्यान करने के पश्चात सामर्थ्यानुसार गंध (इत्र), धूप, दीप, पुष्प, ताम्बूल (पान) चन्दन आदि माँ को समर्पित करें ।

७. कवचः इसके पश्चात माँ के कवच का पाठ करें। कवच का पाठ आपको साधना में आने वाली सभी विपत्तियों से दूर रखता है। कवच के पाठ से माँ का सान्निध्य प्राप्त होता है

८. मंत्र जप – कवच के पाठ के बाद विनियोग, न्यासादि करें एवं उसके पश्चात अपने मंत्र का जप सुनिश्चित संख्या में करें ।

९. अन्य स्तोत्र एवं पाठ – मंत्र जप के पश्चात यदि समय हो तो भगवती के हृदय स्तोत्र, अष्टोत्तरशतनाम, सहस्रनाम आदि का पाठ करना चाहिए ।

१०. मृत्युंजय भैरव मंत्र – अन्त में दशांश मृत्युंजय भैरव मंत्र “ हौं जूं सः ” का जप अवश्य करना चाहिए ।

११. क्षमा याचना एवं जप समर्पण – अन्त में माँ से क्षमा याचना करें । अपने सीधे हाथ में थोड़ा जल लेकर अपने द्वारा किये गये सभी मंत्र जप को माँ के बायें हाथ में समर्पित करें एवं जल को माँ के बायें हाथ में अथवा बगलामुखी यंत्र पर चढा दें ।

१२. अन्त में माँ को प्रणाम करते हुए अपने आसन के नीचे जल डालकर अपने माथे से लगायें एवं बायें पैर को पहले पृथ्वी पर रखते हुए बाद में दायें पैर को पृथ्वी पर रखें ।

१३. साधना करने के बाद कम से कम आधा घण्टे तक मौन अवश्य रखना चाहिए । इससे साधक का तप क्षीण नही होता ।

१४. अपने आसन एवं माला को किसी भी व्यक्ति को छूने नही देना चाहिए चूँकि इन दोनो में साधक की आध्यात्मिक उर्जा छुपी होती है ।

१५. एक साधक को कभी भी किसी की निन्दा नही करनी चाहिए और ना ही कभी अंहकार करना चाहिए । ये दोनो साधक को दैवीय कृपा से दूर करते हैं और साधक की सारी उर्जा का नाश कर देतें हैं।

१६. साधकों को मेरा एक परामर्श और भी है कि वे जब भी माँ पीताम्बरा अथवा किसी अन्य के मंत्रों का जप करें तो उनके समक्ष अपनी कोई लालसा या इच्छा व्यक्त न करें। वे आद्याशक्ति हैं, सम्पूर्ण सृष्टि की अधिष्ठात्री हैं, उनसे किसी भी साधक के मन की इच्छा छुपी हुई नहीं है। अतः अपनी इच्छा व्यक्त करके स्वयं को हल्का बनाना है। जब साधक अपनी कोई इच्छा लेकर माँ के मंत्रों का जप करता है और संकल्प लेता है कि अपने अमुक कार्य की पूर्णता के लिए मैं अमुक देवी या देवता के इतनी संख्या में जप करूंगा और उसका वह कार्य पूर्ण हो जाता है तो माँ की कृपा भी वंही समाप्त हो जाती है। आपने किसी कार्य की सफलता अथवा किसी भी प्रकार की प्राप्ति के लिए किसी भी देवी अथवा देवता के एक निश्चित संख्या में जप करने का संकल्प लिया और आपका कार्य पूर्ण हो गया तो फिर भगवती या देवता से आपको कोई सम्बन्ध नहीं रह जाता है। क्योंकि यह एक मात्र विनिमय है, आदान-प्रदान है। एक ऐसा विनिमय जो दो व्यक्तियों के मध्य परस्पर होता है। आपने किसी को कुछ दिया

उसने बदले में आपका कार्य कर दिया। इसके उपरान्त कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध किसी प्रकार का नहीं रह जाता । आपको चाहिए कि आप जिस भी देवी-देवता का मंत्र जप करते हैं तो उसे केवल आप अपने देवता की प्रसन्नता के लिए कीजिए। यदि आपके मंत्र जप से आपका देवी-देवता प्रसन्न हो जाता है तो आपकी समस्त इच्छाएं आपके बिना व्यक्त किये ही पूर्ण हो जायेंगीं और अपने देवी-देवता से आपके सम्बन्ध भी प्रगाढ बने रहेगें। अतः आपको चाहिए कि उनसे एकत्व करने का प्रयास करें न कि कुछ मांगने का। यदि आप ऐसा करते हैं तो मेरा वचन है कि आपकी प्रत्येक साधना पूर्णता को प्राप्त करेगी।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9917325788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya By Shri Yogeshwaranand Ji

Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya is the upcoming book of my father and my guru Shri Yogeshwaranand Ji on Ma Baglamukhi. Only limited copies of this book are going to be published. If you want to secure your copy before all sold out please make a payment of Rs 680 into the below A/C
Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298
IFSC Code – UTIB0001094
After payment send your complete address and payment receipt to shaktisadhna@yahoo.com or sumitgirdharwal@yahoo.com. For more details please call on +91-9540674788, 91-9410030994

Feedback & Support

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will digitalize all the content provided by Shri Yogeshwaranand Ji regarding das mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. I can't do it alone. To do the same I request all of you to help me achieve this goal.

Requirements to accomplish this goal

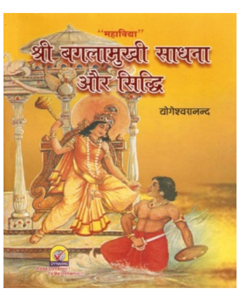
1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Preferable font chanakya) or Microsoft Office (Font Used Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project to complete.

I am waiting for your feedback and support.
Sumit Girdharwal
+91-9540674788,
+91-9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com
sumitgwal@gmail.com

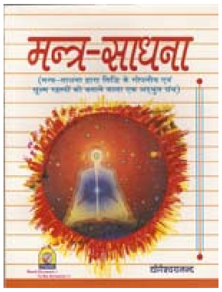
Dear readers! Very soon We are going to start an E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at sumitgirdharwal@yahoo.com Thanks

Books written by Shri Yogeshwaranand Ji.

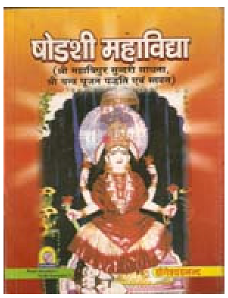
1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi



2. **Mantra Sadhana**



3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)



Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9917325788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org